# ❍ 23 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
## ⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *बाप का परिचय देने की युक्ति रची ?*

➢➢ *आँखे खोलकर बाप को याद करने का अभ्यास किया ?*

➢➢ *सर्व शक्तियों को समय पर आर्डर प्रमाण कार्य में लगाया ?*

➢➢ *संतुष्टता की शक्ति से प्रसन्नता का अनुभव किया ?*

---

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

〰✧ *आत्मा बोल रही है। आत्मा के यह संस्कार हैं.... यह पहला पाठ पक्का करो।* आत्मा शब्द स्मृति में आते ही रुहानियत - शुभ भावना आ जायेगी। *दृष्टि पवित्र हो जायेगी। सर्व के स्नेही, सहयोगी बन जायेंगे।*

⊹˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚° ••☆••✧˚°

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न

दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

---

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बाप समान सर्व गुण सम्पन्न आत्मा हूँ"*

〰✧ जैसे बाप के गुणों का वर्णन करते हो वैसे स्वयं में भी वे सर्व गुण अनुभव करते हो? *जैसे बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है वैसे ही स्वयं को भी ज्ञान स्वरूप सुख स्वरूप अनुभव करते हो? हर गुण का अनुभव - सिर्फ वर्णन नहीं लेकिन अनुभव।*

〰✧ जब सुख स्वरूप बन जायेंगे तो सुख स्वरूप आत्मा द्वारा सुख की किरणें विश्व में फैलेंगी क्योंकि मास्टर ज्ञान सूर्य हो। *तो जैसे सूर्य की किरणें सारे विश्व में जाती हैं वैसे आप ज्ञान सूर्य के बच्चों का ज्ञान, सुख, आनन्द की किरणें सर्व आत्माओ तक पहुँचेंगी।*

〰✧ जितने ऊँचे स्थान और स्थिति पर होंगे उतना चारों और स्वत: फैलती रहेंगी। तो ऐसे अनुभवी मूर्त हो? *सुनना सुनाना तो बहुत हो गया अभी अनुभव को बढ़ाओ। बोलना अर्थात् स्वरूप बनाना, सुनना अर्थात स्वरूप बनना।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

---

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ तो बापदादा देख रहे थे कि हिसाब के अनुसार यह सेकण्ड स्टेज है जीवनमुक्त, लास्ट स्टेज तो है - देह से न्यारे विदेही-पन की। *उस स्टेज और जो स्टेज सुनाई उसके लिए और बहुत-बहुत-बहुत अटेन्शन चाहिए।*

〰✧ सभी बच्चे पूछते हैं 99 आयेगा क्या होगा? क्या करें? क्या करें, क्या नहीं करें? बापदादा कहते हैं 99 के चक्कर को छोडो। *अभी से विदेही स्थिति का बहुत अनुभव चाहिए।* जो भी परिस्थितियाँ आ रही हैं और आने वाली हैं उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए।

〰✧ इसलिए और सभी बातों को छोड यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा। क्या होगा, इस क्वेचन को छोड दो। *विदेही अभ्यास वाले बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

---

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂
☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *चलते-फिरते सदैव अपने को निराकारी आत्मा या कर्म करते अव्यक्त फ़रिश्ता समझो। तो सदा ऊपर रहेंगे, उड़ते रहेंगे खुशी में। फ़रिश्ते सदैव उड़ते हुए दिखाते हैं। फ़रिश्ते का चित्र भी पहाड़ी के ऊपर दिखायेंगे।* फ़रिश्ता अर्थात् ऊँची स्टेज पर रहने वाला। *कुछ भी इस देह की दुनिया में होता रहे, लेकिन फ़रिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे।* सकाश भी देना है क्योंकि कल्याण के प्रति निमित है। *साक्षी हो देखते सकाश अर्थात् सहयोग देना है। सीट से उतर कर सकाश नहीं दी जाती। सकाश देना ही निभाना है। निभाना अर्थात् कल्याण की सकाश देना, लेकिन ऊँची स्टेज पर स्थित होकर देना इसका अटेन्शन हो। निभाना अर्थात् मिक्स नहीं हो जाना, लेकिन निभाना अर्थात् वृत्ति, दृष्टि से सहयोग की सकाश देना।* फिर सदा किसी भी प्रकार के वातावरण के सेक में नहीं आयेगा। अगर सेक आता तो समझना चाहिए साक्षीपन की स्टेज पर नहीं है। *कार्य के साथी नहीं बनना है, बाप के साथी बनना है। जहाँ साक्षी बनना चाहिए वहाँ साथी बन जाते तो सेक लगता। ऐसे निभाना सीखेंगे तो दुनिया के आगे लाइट-हाउस बन के प्रख्यात होंगे।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
( आज की मुरली के सार पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- आँखें खोलकर खाते-पीते, चलते-फिरते बाप की याद में रहना"*

➳ _ ➳ मैं फरिश्ता पंच तत्वों के बने इस शरीर से बाहर निकल... इस पंच तत्वों की दुनिया से भी ऊपर उड़ते हुए... सफेद प्रकाश का सूक्ष्म शरीर धारण कर... सफ़ेद प्रकाश की दुनिया में पहुँच जाती हूँ... *इस साकारी देह और दुनिया से अलग हो कर मैं स्वयं को बहुत ही हल्का और निर्बन्धन अनुभव कर रही हूँ...* श्वेत बादलों के सिंहासन पर बैठ श्वेत चमकीली प्रकाश की काया में दिव्य लाइट फैलाते हुए प्यारे बाबा मुझे अपने पास बुलाते हैं...

❊ *अपने दिव्य लाइट माइट से रूहानी गुलशन को महकाते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... *ईश्वर पिता की यादो में डूबकर हर कर्म को ईश्वरीय यादो की खुशबु से महकाओ...* यह यादे ही सच्चे सतयुगी सुखो का आधार है... याद को सांसो में समाकर नर से नारायण बन... सतयुगी धरा पर शान से मुस्कराओ... हर पल मीठे बाबा की याद की खुमारी में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मनमनाभव महामन्त्र की वरदानी बन चलते फिरते एक बाबा की याद में रह कहती हूँ:-* "हाँ मेरे प्यारे बाबा... *मैं आत्मा आपकी मीठी यादो में कर्मयोगी फ़रिश्ता बन गई हूँ...* आपकी यादे मेरे प्राण बन गयी है... सांसो साँस आपको याद करके मै आत्मा देवताई रंग रूप में ढल रही हूँ... और असीम सुखो की अधिकारी बन रही हूँ..."

❊ *मीठे बाबा अपने यादों के रंग में मुझे गहरे रंगते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... चलते फिरते उठते बैठते हर कर्म में ईश्वरीय यादो के नशे में झूमते रहो... *मीठे बाबा की यादो में सर्वगुण सम्पन्न हो, देवताई खूबसूरती को सहज ही पायेंगे...* अब जो ईश्वर पिता आपके सुखो की खातिर... जो धरा पर उतर आया है तो, सिवाय पिता के किसी को भी याद न करो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्रभु मिलन की मस्तियों में झूमती हुई कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मैं आत्मा ईश्वर पिता को यादो में बसाये कितने खुबसूरत दिल वाली हो गई हूँ... मनुष्य के पीछे भटकने वाला यह दिल... *आज प्यारे बाबा को धडकन सा समाये धडक रहा है...* और सतयगी सखो को सहज ही रच रहा

है..."

❇ *प्यारे बाबा दिव्य गुण, शक्तियों से मेरे जीवन को ज्योतिर्मय करते हुए कहते हैं:-* "मेरे सिकीलधे मीठे बच्चे... जितना जितना कर्मो में यादो का रंग भरकर... दिलकश बनायेगे, उतना ही श्रेष्ठ कर्मो का फल, सुखो का स्वर्ग पायेंगे...* दिव्य गुणो और शक्तियो से सजधज कर सुख शांति और आनंद से भरा... खुशियो की रौनक से खिला, खुबसूरत और खुशनुमा जीवन पायेंगे..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्रेम रस में भीगकर प्रभु का गुणगान करती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मैं आत्मा अपने कर्मो को आपकी यादो में भिगोकर खुशबूदार कर रही हूँ... साधारण मनुष्य से प्यारा सा दिव्य रूप पाकर... महाभाग्यवान बन मुस्करा रही हूँ... *प्यारे बाबा आपकी यादे ही अब जीवन का पर्याय है... इन यादो में मै कितनी सुखी हो गयी हूँ..."*

———————————————

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
( आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित... )

✺ *"ड्रिल :- आंख खोल कर बाप को याद करने का अभ्यास करना है*"

➳ _ ➳ आबू की सुंदर पहाड़ी पर बसे मधुबन घर मे पीस पार्क में बैठी मैं प्रकृति के खूबसूरत नज़ारो का आनन्द ले रही हूँ और सोच रही हूँ कि *कितनी भाग्यवान हूँ मैं आत्मा जो भगवान की इस अवतरण भूमि पर आकर भगवान को साकार देखने का, उनसे मीठी - मीठी रूह रिहान करने का, उनसे सम्मुख मिलन मनाने का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है*। भक्ति में भक्त घण्टों अपनी आंखें बंद कर समाधि लगा कर भगवान को याद करते हैं लेकिन इस बात से कितने अनजान है कि आँखों को बंद करके प्रभु दर्शन नही हो सकते।

➳ _ ➳ परमात्मा के सुंदर स्वरूप का रसपान करने के लिए आंखों को बंद करने की आवश्यकता नही बल्कि आंखों को खोल कर. मनबदिध के दिव्य चक्ष

से उसे निहारने में जो आनन्द है वो अवर्णनीय है। *यही विचार करते - करते अपने प्यारे मीठे बाबा का सुंदर स्वरूप मेरी आँखों के सामने उभर आता है और मैं अनुभव करती हूँ कि अव्यक्त ब्रह्मा बाबा मेरे बिल्कुल सामने आ कर उपस्थित हो गए हैं* और देखते ही देखते परमधाम से सर्वशक्तिवान निराकार भगवान अपनी सर्वशक्तियों को बिखेरते हुए ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में आ कर विराजमान हो जाते हैं।

➳ _ ➳ ज्ञान के दिव्य चक्षु और अपनी खुली आँखों से परमात्म मिलन के इस खूबसूरत नजारे को मैं देख रही हूँ। अपनी नजरों को एकटक बापदादा पर टिकाकर मैं भगवान के इस अति सुंदर, अद्भुत स्वरूप को निहारते हुए असीम आनन्द का अनुभव कर रही हूँ। *भगवान को अपने सम्मुख देखने का यह अनुभव मन को अथाह सुख से भरपूर कर रहा है*। बापदादा की शक्तिशाली मीठी दृष्टि मेरे अंदर शक्तियों का संचार कर रही है। बापदादा के मुख से उच्चरित मधुर महावाक्य
मेरे रोम - रोम में समाकर मुझे रोमांचित कर रहें हैं।

➳ _ ➳ साकार परमात्म मिलन के इस अनमोल सुंदर दृश्य को अपने नयनों में समाकर अब मैं अपने निराकार भगवान से निराकार स्वरूप में मिलन मनाने के लिए अपने निराकारी ज्योति बिंदु स्वरूप में स्थित हो कर अपने मन बुद्धि को अपने परमधाम घर पर एकाग्र करती हूँ। *मन बुद्धि का कनेक्शन परमधाम में अपने शिव पिता के साथ जोड़ अब मैं आत्मा मन बुद्धि के विमान पर बैठ उड़ चलती हूँ अपने स्वीट साइलेन्स होम परमधाम की ओर*। चन्द सेकण्डों की रूहानी यात्रा करके मैं पहुँच जाती हूँ अपने शिव पिता के पास उनके निजधाम में।

➳ _ ➳ अथाह शान्ति से भरपूर इस शान्तिधाम घर में निराकार बीज स्वरूप में स्थित होकर, अपने बीज रूप शिव पिता परमात्मा के साथ मैं मंगल मिलन मना रही हूँ। *उनसे निकल रहे सर्वगुणों और सर्वशक्तियों के प्रकाश की एक - एक किरण को निहारते हुए मैं असीम आनन्द का अनुभव कर रही हूँ*। उनसे आ रही सर्वशक्तियाँ अनन्त किरणों के रूप में मुझ आत्मा के ऊपर पड़ कर मझे गहन शीतलता की अनभति करवा रही हैं। एक अदभत दिव्य अलौकिक

आनन्द और अथाह सुख का मैं अनुभव कर रही हूँ। अतीन्द्रिय सुख के झूले में मैं झूल रही हूँ।

➳ _ ➳ *अपने निराकार भगवान के साथ निराकार स्वरूप में मिलन मना कर, उनकी सर्व शक्तियों को स्वयं में भरकर असीम ऊर्जावान बन कर अब मैं वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ*। अपने साकारी तन में विराजमान हो कर, अपने शिव पिता की याद को सदा अपने हृदय में बसाये अब मैं सदा स्मृति स्वरूप बन कर रहती हूँ। *आँखों को खोल कर बाबा को याद करते हुए, मन बुद्धि से साकार और निराकार मिलन के सुन्दर दृश्य देखते हुए अपने भगवान बाप से जब चाहे तब मिलन मनाने का सुख अब मैं निरन्तर प्राप्त करती रहती हूँ*।

————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के वरदान पर आधारित... )

✺ *मैं सर्व शक्तियों को समय पर आर्डर प्रमाण कार्य मे लगाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं मास्टर सर्वशक्तिमान आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
( आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित... )

✺ *मैं आत्मा सन्तुष्टता की शक्ति को प्रसन्नता का आधार बना लेती हूँ।*

✺ *मैं सदा सन्तुष्ट आत्मा हूँ ।*
✺ *मैं प्रसन्न चित्त आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————————

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
( अव्यक्त मुरलियों पर आधारित... )

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *बापदादा सदा ही बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में देखने चाहते हैं*। जब कहते ही हो, बाप ही मेरा संसार है। यह तो सब कहते हो ना! दूसरा भी कोई संसार है क्या? बाप ही संसार है, तो संसार के बाहर और क्या है? *सिर्फ संस्कार परिवर्तन करने की बात है। ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार। ज्ञान सभी में है, शक्तियां भी सभी के पास हैं। लेकिन कारण क्या होता है? जो शक्ति, जिस समय कार्य में लानी चाहिए, उस समय इमर्ज होने के बजाए थोड़ा पीछे इमर्ज होती हैं*। पीछे सोचते हैं कि यह न कहकर यह कहती तो बहुत अच्छा। यह करने के बजाए यह करती तो बहुत अच्छा। लेकिन जो समय पास होने का था वह तो निकल जाता है, वैसे सभी अपने में शक्तियों को सोचते भी रहते हो, सहनशक्ति यह है, निर्णय शक्ति यह है, ऐसे यूज करना चाहिए। सिर्फ थोड़े समय का अन्तर पड़ जाता है।

➳ _ ➳ *और दूसरी बात क्या होती है? चलो एक बार समय पर शक्ति कार्य में नहीं आई और बाद में महसूस भी किया कि यह न करके यह करना चाहिए था*। समझ में आ जाता है पीछे। लेकिन उस गलती को एक बार अनुभव करने के बाद आगे के लिए अनुभवी बन उसको अच्छी तरह से रियलाइज कर लें जो दुबारा नहीं हो। फिर भी प्रोग्रेस हो सकती है। *उस समय समझ में आता है - यह रांग है. यह राइट है। लेकिन वही गलती दबारा नहीं

हो, उसके लिए अपने आपसे अच्छी तरह से रियलाइजेशन करना, उसमें भी इतना फुल परसेन्ट पास नहीं होते*। और माया बड़ी चतुर है, वही बात मानो आपमें सहनशक्ति कम है, तो ऐसी ही बात जिसमें आपको सहनशक्ति यूज करना है, एक बार आपने रियलाइज कर लिया, लेकिन माया क्या करती है कि दूसरी बारी थोड़ा-सा रूप बदली करके आती है। होती वही बात है लेकिन जैसे आजकल के जमाने में चीज वही पुरानी होती है लेकिन पालिश ऐसी कर देते हैं जो नई से भी नई दिखाई दे। तो माया भी ऐसे पालिश करके आती है जो बात का रहस्य वही होता है *मानों आपमें ईर्ष्या आ गई। ईर्ष्या भी भिन्न-भिन्न रूप की है, एक रूप की नहीं है। तो बीज ईर्ष्या का ही होगा लेकिन और रूप में आयेगी। उसी रूप में नहीं आती है। तो कई बार सोचते हैं कि यह बात पहलेवाली तो वह थी ना, यह तो बात ही दूसरी हुई ना। लेकिन बीज वही होता है सिर्फ रूप परिवर्तित होता है।उसके लिए कौन-सी शक्ति चाहिए? - 'परखने की शक्ति'*।

➳ _ ➳ *इसके लिए बापदादा ने पहले भी कहा है कि दो बातों का अटेन्शन रखो। एक - सच्ची दिल। सच्चाई। अन्दर नहीं रखो*। अन्दर रखने से गैस का गुब्बारा भर जाता है और आखिर क्या होगा? फटेगा ना! तो सच्ची दिल - चलो आत्माओं के आगे थोड़ा संकोच होता है,थोड़ा शर्म-सा आता है - पता नहीं मुझे किस दृष्टि से देखेंगे। लेकिन सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो *ऐसे नहीं मैंने बापदादा को कह दिया, यह गलती हो गई। जैसे आर्डर चलाते हैं - हाँ, मेरे से यह गलती हो गई, ऐसे नहीं।महसूसता की शक्ति से, सच्ची दिल से, सिर्फ दिमाग से नहीं लेकिन दिल से अगर बापदादा के आगे महसूस करते हैं तो दिल खाली हो जायेगी, किचड़ा खत्म। बातें बड़ी नहीं होती है, छोटी ही होती है लेकिन अगर आपकी दिल में छोटी-छोटी बातें भी इकट्ठी होती रहती हैं तो उनसे दिल भर जाती है। खाली तो नहीं रहती है ना! तो दिल खाली नहीं तो दिलाराम कहाँ बैठेगा*! बैठने की जगह तो हो ना! तो सच्ची दिल पर साहेब राजी। जो हूँ, जैसी हूँ, जो हूँ, जैसा हूँ, बाबा आपका हूँ।

✺ *ड्रिल :- "सच्ची दिल में दिलाराम को बिठाकर, समय पर शक्तियों को इमर्ज कर माया पर विजय प्राप्त करने का अनुभव"*

➳ _ ➳ देह रूपी पिंजरें में कैद *मैं आत्म पंछी उड चला हूँ मन बुद्धि के पंख पसारे... एक बल एक भरोसा का तिनका अपनी नन्हीं सी चोच में सम्भालें*... गगन चुंबी इमारतों को, ऊँचे शैल शिखरों को पार करता हुआ... *बादलों के साथ खेलता, चाँद तारों को पीछे ढकेलता मैं पहुँच गया हूँ सूक्ष्म वतन में*... श्वेत प्रकाश का एक ऐसा लोक जो कुछ कुछ ग्लेशियर की अनुभूति करा रहा है... सब कुछ श्वेत... *झरने, शिखर, नदिया और उन में तैरती कश्तियाँ*... और कश्तियों पर सवार वों फरिश्ते... गरिमामयी सी चाल... मुस्कुराहटों में बरसता जीवन... आँखों में तैरता अपनत्व...

➳ _ ➳ *मैं फरिश्ता जाकर बैठ गया हूँ एक बहते झरने के नीचे*... शिव प्यार का झरना... मेरे रोम रोम में समाती जा रही है इसकी एक -एक बूँद... शीतलता पावनता और शक्तिस्वरूप बनकर... *मन के कोने कोने से हर कीचडे को बहाकर ले जा रही है इसकी हर धारा... पूरी महसूसता के साथ अपनी हर कमी कमजोरी को बाबा के सम्मुख रखता हुआ मैं... और अब दिल दर्पण चमक उठा है किसी चमचमाते हीरे की तरह*... हर बोझ हर भार शिव स्नेह की धाराओं में बह चला है... *सच्ची दिल में आकर चुपके से विराजमान हो गये है शिव सूर्य*... और प्रकाश से दमक उठा है मेरा रोम रोम... मेरे अभिषेक को उतावली सी अष्ट शक्तियाँ... जो मेरी सहचरी बनकर मुझमें समाती जा रही है...

➳ _ ➳ *अब मैं फरिश्ता सैकडों फरिश्तों के साथ उड चला विश्व सेवा पर*... अष्ट शक्तियों के सुरक्षा घेरें में... पाँचों तत्वों को सकाश देता हुआ... पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल और वायु... सन्तुष्ट नजर आ रहे है परम शान्ति की किरणें पाकर... और अब मैं उतर रहा हूँ सागर के किनारें... *सागर की लहरों पर डोलती खाली कश्तियाँ*... और मैं फरिश्ता सवार हो गया हूँ एक छोटी सी कश्ती पर... सभी दूसरी कश्तियों में भी मेरे हमसफ़र फरिश्ते... लहरों पर जगमगातें असंख्य दीपकों की भाँति...

➳ _ ➳ *आकाश में घिरते बादलों के साथ छाता घना अंधकार*... लहरों में सुनामी की आहट... मझधार में फँसी कश्ती... आँखों से ओझल होतें फरिश्ते... और *इन सब मायावी तूफानों से घिरा मैं आह्वान कर रहा हूँ अष्ट शक्तियों का... भय के सब संकल्प सिमटते जा रहे है*... और *सामना कर रहा हूँ मैं

उन लहरों का*... कश्ती को छोडकर मैं लहरों पर ही सवार हो गया हूँ... *दिल में बैठे दिलाराम को दिल की बात बता मैं बेफिक्र होता जा रहा हूँ... ये सुनामी लहरें, शिव स्नेहीं लहरों में रूपान्तरित हो रही है... और अंधेरें को चीरता मैं निर्णय शक्ति के आह्वान पर खुद को छोड देता हूँ लहरों के अनुकूल दिशा में*...

➳ _ ➳ *दूर से आता लाईट हाऊस का प्रकाश... और उसी दिशा में मुझे लेकर जाती हुई लहरे*... आकाश में बादलों के पीछे से झाँकता चाँद... *चाँदनी की गागर भर कर उडेल रहा है मेरी ओर*... मेरे अनूकूल होता वातावरण मुझे अपनी जीत का एहसास करा रहा है... रात का अंधकार समाप्त हो गया है... शिव सूर्य बाहें फैलाए खडे है मेरे सामने... मैं फरिश्ता समाँ गया हूँ उनकी गोद में... अपने वजूद को समेटता सागर चरणों में झुक कर अभिनन्दन कर रहा है बापदादा का... और *मैं मुस्कुरा रहा हूँ उनकी गोद में... सम्पन्न स्वरूप में*... दुगुने उत्साह से शक्तियों को एक एक संस्कार के परिवर्तन का दायित्व देता हुआ मैं लौट आया हूँ अपनी देह में... *माया के तूफानों पर जीत का गहरा अनुभव लिए*...

---

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔

---